International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 11-11-2020; Accepted: 26-11-2020; Published: 11-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 143-147

कोरोना आपदा: साहित्य व साहित्यकार

डॉ. चसुल फौगाट

असिस्टेंट प्रोफेसर (अंग्रेजी) स्कूल ऑफ़ लॉ, बेनेट यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नॉएडा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत पेपर कोरोना आपदा के दौरान साहित्यकारों की भूमिका को दर्शाता है। किस प्रकार साहित्यकार को अपनी सृजनात्मकता को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान हुआ। किस प्रकार साहित्य ने इस दौरान लोगों के दुखों व् कष्टों को समाज के सामें रखा ताकि वे संवेदना जैसे मूल तत्व को मानवता में जीवंत रख सकें। मनुष्य जैसा सामजिक प्राणी जब अकेले अपने घर में कैद हुआ तब शायद जानवरों, पक्षियों व् अन्य जीवंत प्राणियों को कैद में रखने पर मजबूर किये मनुष्य ने उनके दर्द को समझा। दूसरी और किस प्रकार उन्ही कैद में रहने वाले जीवों ने अकेले पन में उसका साथ दिया। प्राकृतिक आपदाओं और मनुष्य का चोली दामन का साथ रहा है ऐसे में सदा ही साहित्यकारों ने अपनी कलम से उस आपदा काल के दर्द को बयां किया है।

मूलशब्द: कोरोना आपदा, साहित्यकार, सृजनात्मकता, संवेदना, प्राकृतिक आपदा

प्रस्तावना

"हिमगिरि के उतुंग शिकार पर, बैठ शिला की शीट छाँह, एक पुरुष, भीगे नैनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह", कुछ ऐसा ही मंजर हम भी देख रहे थे तालाबंदी के समय अपने-अपने घरों की खिड़कियों से। कोरोना काल, जो की फ्रांज़ काफ्का द्वारा सृजित साहित्य का सा एक हिस्सा मालूम पड़ता है, ने हम सबको अकेला रहने पर विवश कर दिया। तालाबंदी के समय में जब सामाजिक प्राणी अपने-अपने घरों में अकेला कैद था, बहुत से ऐसे उदाहरण देखने को मिले जहाँ अलग-अलग होते हुए भी लोगों ने एक दूसरे की मदद में हाथ बढाए और मनुष्य सामजिक प्राणी कैसे है का प्रमाण हम सबने देखा। कितने ही लोगों ने एक दूसरे की आर्थिक, मानसिक, शारीरिक मदद की। कोई भी बड़ी घटना व उसमे घटित होने वाली छोटी-छोटी घटनाएं साहित्य में अपना स्थान पाती हैं। बात किसी भी आपदा की हो, साहित्यकर उसे किसी नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता आया है।/करती आई है।

२०२० के आरम्भ से विश्व में शुरू होकर यह आपदा भारत में प्रवेश कर गयी। बहुत सारे धार्मिक स्थलों ने जरुरतमंद लोगों को मुफ्त में भर-पेट भोजन करवाया। कितने ही जरुरत-मंद व्यक्तियों को तालाबंदी के बाद उनके घर जाने का प्रबंध किया गया। मानव द्वारा मानव की भलाई व एक जुटता का यह सूंदर दृश्य साहित्य में उतना ही स्थान पाएगा जितना प्रवासी मजदूरों का पलायन का कष्ट। उनके पैरों के छाले, प्यास से बिलखते बच्चे, साइकिल पर अपने पिता को हज़ारों मील ले जाती लड़की, शहर से गावों की तरफ उन लोगों का लौटना जो इस उम्मीद से शहर में पलायन कर गए थे की यहाँ इनका जीवन-स्तर ऊपर उठेगा; ये सारी घटनाएं साहित्य

में अपना स्थान पाएंगी।

एक और जहाँ मनुष्य एक दूसरे की सहायता को आगे आये, वहीं दूसरी और आपदा के दौरान केवल अपना भला सोचने वाले भी बहुतायत मारता में देखे गए। कैसे जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की काला बाज़ारी हुई यह भी किसी कहानी या किसी कविता में अपना स्थान पाएगी। किस प्रकार 'बीभत्स' कहानी में प्लेग से मरे लोगों की लाशें ढोने वाला व्यक्ति अपनी मुट्ठी में चाँद पैसे लिए मर गया। वैसी ही प्रवृति आज भी जीवित है। दिनकर जी की रश्मिरथी में लिखी पंक्तियाँ यहाँ सटीक मालूम पड़ती हैं, "झर गयी पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है; बाहर-बाहर तन सँवर चुका,मन अभी सँवरना बाकी है।"

एक ओर सोशल मीडिया प्लॅटफॉर्म्स पर जहाँ ये सब घटनाएं लघु कहानियों व कविताओं के रूप में सामने आ रही हैं, वहीँ दूसरी और उपन्यास व अन्य विधाओं में इनका प्रकाशन शायद थोड़े समय पश्चात हम तक पहुंचेगा। आने वाली पीढ़ियां इस घटना से कुछ सीख पाएंगी। और साहित्य सदा ही की तरह इसमें अपनी एहम भूमिका में देखा जा सकता है, या देखा जा सकेगा।

साहित्य व आपदा

साहित्य में आपदा का स्थान हमेशा से रहा है। फिर वह चाहे व्यक्तिगत आपदा हो या सामूहिक आपदा। हर भाषा का साहित्य आपदा का जिक्र किसी न किसी रूप में करता रहा है। फिर चाहे वह काला ज़ार, हैज़ा, और मलेरिया का ज़िक्र करता फणीश्वरनाथ रेणू का 'मैला आँचल' हो या अल्बर्ट कामु का 'प्लेग'। आपदा कोई भी रूप लेकर आ सकती है और साहित्य में सदा ही कोई आपदा आधार बन कर कितने ही किरदारों की आवाज बनती है। जयशंकर प्रसाद जी की कामायनी की शुरुवाती पंक्तियाँ, "हिमगिरि के उतुंग शिकार पर, बैठ शिला की शीट छाँह, एक पुरुष, भीगे नैनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह" भी हमें किसी आपदा का संकेत देती हैं। मार्क्वेज़ की पुस्तक "लव इन द टाइम ऑफ़ कॉलरा' और ऐसी जाने कितनी ही अनंत कृतियाँ आपदा और साहित्य को जोड़ती दीख पड़ती हैं। कितने ही ऐसे उदाहरण हमारे सामने हैं जहाँ आपदा सदा साहित्य का केंद्र रहा और छित-पूत घटनाएं उसके आस-पास बुनती दिखाई पड़ीं। आपदा व इसके बाद सालों तक रहने वाले इसके प्रभाव को भी साहित्य में अलग-अलग दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता रहा है। फिर वह 'गरम हवा' में भारत में रह गए मुस्लिमों की व्यथा हो या फिर कुरुक्षेत्र के बाद का हृदयविदारक विवरण देता 'अँधा युग'। साहित्य शब्द अपने आँचल में बहुत से आयाम समेटे हुए है। जब हम साहित्य शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो मानसपटल पर केवल लिखित या मौखिक शब्दों का चित्र ही आता है, परन्तु कला के अन्य रूप जैसे चलचित्र आदि भी साहित्य की ही फैली हुई भुजाएं हैं। फिर चाहे बात 'लाइफ ऑफ़ अ पाई' में व्यक्तिगत आपदा और हिम्मत न हारने की प्रेरणा देता साहित्य हो या फिर सुनामी में खुद को संभालता एक परिवार 'दी इम्पॉसिबल', फिल्म।

राजिंदर सिंह बेदी द्वारा रचित कहानी 'क्वारेंटीन' जो की आज से ८० साले पहले प्रकाशित हुई थी, आज भी कितनी सटीक मालूम पड़ती है। किस प्रकार एक सफाई कर्मचारी सदा ही बलि का बकरा बनाया जाता है चाहे वह साधारण चलने वाली जिंदगी हो, कोरोना काल हो, या प्लेग जैसी महामारी। फूल माला पहना देने से और नायक कह देने से हम इनकी अंदर की पीड़ा को नहीं जान पाते। अंदर छिपी ये पीड़ा और इसको हमारे सामने अपने शब्दों या चित्रों, चलचित्रों में यदि कोई पहुंचाता है है तो वह है साहित्यकार। ये भाव

और इनकी अभिव्यक्ति की दूरी को समेत कर श्रोता और पाठक तक पहुंचाने का यह कार्य साहित्य बखूबी निभाता आया है। पेट्रोल में भीगे लाशों के जलते ढेर की लपटें जब आकाश को छू रहीं हैं, उस वक़्त सूर्य का रंग और इन लपटों का रंग एक है।

साहित्य, साहित्यकार, व आपदा

जो हम आम तौर पर अखबारों, रेडियो, टेलीविज़न, इंटरनेट, सोशल मीडिया पर देख, सुन, व पढ़ लेते हैं वह साहित्य से किस प्रकार भिन्न हैं, इस प्रश्न का उत्तर देते हुए लेखक असगर वजहद साहब कहते हैं की साहित्य किसी घटना को उस दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है के वह हमारी संवेदना को अंदर तक झकझोर कर रख देती है। वही घटना जो हमारे लिए एक सामान्य घटना थी, एक ख़ास घटना का रूप धारण कर लेती है।

थाईलैंड, इंडोनेशिया, व भारत के भी कुछ स्थानों में आई भयंकर सुनामी की घटना का विवरण जब हम "द इम्पॉसिबल' नामक फिल्म में देखते हैं तो उस दर्द को अंदर तक महसूस कर पाते हैं। उसी प्रकार प्रेमी जोड़े के माध्यम से दिखाई गई टाइटैनिक जैसा विशाल जहाज डूबने की घटना को जब जनरल से स्पेसिफिक बना दिया जाता है, तब वह कुछ अलग छाप हम पर छोड़ती है। "साहित्यकार आम तौर पर एक कोशिश यह करता है की वो किसी भी घटना की बहुबि बयां न कर के उसमे कोई सकारत्मक, कोई उमीदी की किरण जागृत कर दे", असगर वाजिद साहब। साहित्यकारों का मूल उद्देश्य होता है संवेदना का संचार करना और अपने व्यापक दृष्टिकोण से पाठक या श्रोता की संवेदना को प्रकट करना। मशहूर लेखक टी एस एलियट के शब्दों में कहें तो एक लेखक या कवि सदैव किसी घटना को देखता/देखती है और उस संवेदना, उस पीड़ा को महसूस करके उसे अपने शब्दों में पिरोती/पिरोता है। और जितना ही एक कलाकार उस घटना में होते हुए भी उसमे नहीं होता, वह उतना ही महान कलाकार है (टी अस इलियट)। यह टसथ पीड़ा, विरह वेदना, कष्ट आदि के समय में साहित्य जीव की जिजीविषा को उत्प्रेरित करने का काम करता है। हालांकि कुछ रूप मनोरंजन के भी काम आते हैं, परन्तु साहित्य सदैव ही एक व्यक्ति की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है जो लिखने वाले को इमोशनल रिलीफ व पढ़ने वाले को संवेदनशील बनाने में मदद करता है। घोर निराशा के पलों में भी एक साहित्यकार उम्मीद की किरण को तलाशता है। किस प्रकार दुःख के भाव का आंसू के रूप में बह जाना मनुष्य की मानसिक सेहत के लिए जरुरी है का विवरण एरिस्टोटल अपनी पुस्तक 'पोएटिक्स' में करते हुए कहते हैं के कथरिसिस बहुत आवश्यक है।

पूर्व-आपदाओं को आधार बना कर लिखा गया साहित्य-- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर

यदि हम आपदाओं की बात करें तो विश्व युद्धों की घटनाओं पर जाने कितना ही साहित्य लिखा गया, और आज तक लिखा जा रहा है। जापान का चीन पर आक्रमण, जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण, अमेरिका का हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु-बम का हमला और विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात हुई सिविल-वार्स ने साहित्य और कला को अथाह सामग्री दी जिससे साहित्य का निर्माण हुआ। इतिहास और इसकी घटनाएं को मनुष्य की भावनाओं से पृथक कर पाना लगभग असंभव है। ऐसे में फिक्शन एवं नॉन-फिक्शन साहित्य अपनी-अपनी जगह बनाए हुए है। नाज़ीवाद के दौरान बने गैस-चैम्बर्स, कंसंट्रेशन-कैम्प्स, और न जाने कितनी ही मार्मिक घटनाएं सदा ही साहित्य का केंद्र बिंदु रहीं हैं। भारत-पाकिस्तान के विभाजन के दौरान हुआ विश्व का

सबसे बड़ा पलायन, लाखों कहानियों, कविताओं, उपन्यासों का केंद्र रहा है। उपनिवेशीकरण के दौरान हुई घटनाएं, गिरमिटियों का प्रवास ये भी आपदा का ही एक रूप हैं जिसने साहित्य को नए आयाम दिए।

उसी प्रकार भारत में हुए स्वतंत्रता संग्रामों की घटनाओं पर केंद्रित जाने कितना ही साहित्य आज भी पढ़ कर आज की पीढ़ी न केवल लाभान्वित हो रही है अपितु उस भावना से अपने आप को जोड़ पा रही है। कहानी के रूप में कही गई कोई भी घटना किस प्रकार हमारी संवेदना व कल्पना शीलता को झकझोटी है इसके लिए किसी प्रमाण की शायद आव्यशकता नहीं। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सदा ही समाज की बुराईयां रूपी आपदा का विवरण देखने को मिलता है जैसे, बाल-विवाह, दहेज़, जाती-व्यवस्था आदि। अपने उपन्यास 'सेवासदन' में वैश्याओं के कारण समाज पर पनपती आपदा व समाज के ढाँचे की कमियों के कारण स्त्रियों को विवशतावश वैश्यावृति में धकेलती सरंचना भी एक आपदा के ही रूप में पढ़ी व समझी जा सकती है।

कोरोना आपदा के दौरान लिखा गया साहित्य

मशहूर लेखक सुरेंद्र मोहन पाठक के शब्दों में, "१९४७ में जब मैं लाहौर से दिल्ली आया था तब मैंने अपनी आँखों से वह प्रवास का मंजर देखा था। मैं भी उस काफिले का एक हिस्सा था।" उनका मानना है के वह पीड़ा जो केवल कुछ समय की नहीं है, सदा उस पर साहित्य लिखा जाता रहा है और लिखा जाता रहेगा। कोरोना काल के दौरान हुआ प्रवास भी अनेकों ज़िन्दगियों की कहानियां लेकर आएगा। यह वैश्विक समस्या केवल एक देश, क्षेत्र, या राष्ट्र की न होकर समूचे देश के सामने मुँह बाए खड़ी है। मिडिया के बदलते स्वरुप के कारण और डिजिटल मीडिया की लोकप्रियता के कारण, अनेकों लघु कथाएं, कवितायें, आलेख हम पढ़ पा रहे हैं। अशोक वाजपयी जी की कविता 'पृथ्वी का मंगल हो' ऐसी ही एक कविता है। जिसमे कवी चारों और निराशा और उदासी होते हुए भी उम्मीद की तस्सल्ली दे रहा है। श्रुत कृति की कहानी 'सूर्यास्त से पहले', जिसमे एक विवाहित जोड़ा दूर-दूर रहते हुए एक दूसरे को आश्वासन दे रहा है। पत्नी अपने निराश पति को प्रेरणा दे रही है। उसी प्रकार मंजुला भटनागर की कहानी 'तथास्तु' जिसमे अर्जुन व कृष्ण के गीता संवाद को बड़ी खूबसूरती से 'ग्रीन जोन कैसे ऑरेंज जोन बन जाएगा, ऑरेंज कैसे रेड बन जाएगा' प्रस्तुत किया गया है। कोरोना काल में जब मनुष्य के पास असीम समय है अपने आप के साथ बिताने के लिए, कैसे वह बड़ी खूबसूरती से अपनी अभिव्यक्तियों को दूसरों तक पहुंचा रहा/रही है। रेखा राजवंशी की कहानी 'अनंत यात्रा' जिसमे एक बुजुर्ग जो भारत पाकिस्तान के विभाजन के समय प्रवासी बना था, एक बार फिर कुवेरेन्टीन के समय में अपने अतीत में डूब जाता है, और अपनी अंतिम यात्रा पर निकल जाता है।

कोरोना काल--एकांत का महत्व बनाम मनुष्य एक सामाजिक प्राणी

एनटून चेखोव की कहानी 'द बेट' इस कोरोना काल की आपदा में सन्दर्भ में एकदम सटीक प्रतीत होती है। उस कहानी में लगी शर्त के कारण एक वकील अपनी जिंदगी के खूबसूरत १५ साल एकांतवास में बिताता है। उन १५ वर्षों में वह ६ नयी भाषायें सीखता है, असंख्य किताबें पढता है, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचता है के जीवन के भोग-विलास मिथ्या हैं। पैसा, धन-दौलत, माया, जिसपर वह १५ साल पहले जान छिड़कता था, अब वह जान गया है के ये सब केवल वस्तुएं हैं, जीवन का मूल किसी और चीज़ में है। धार्मिक ग्रंथों में भी आत्म-संवाद, तपस्या, ध्यान-अभ्यास

को अत्यधिक महत्व दिया गया है। ऋषि-मुनि वर्षों तक वनो में तपस्या में, ध्यान में लीन रहा करते थे। इस कोरोना काल ने हमें वह अवसर दिया है जिसमे हम आत्म-संवाद कर सकते हैं जो की किसी भी साहित्यकार के लिए बहुत आवश्यक है। प्रकृति के करीब रह कर एक साहित्यकार अपनी सृजनात्मकता के घोड़े दौड़ा सकता है। इस कठिन समय में स्वयं के साथ वक़्त बिताना, अन्तर्मुख होना और ऐसे कितने ही कार्य जो हम अपनी दौड़ती भागती दिनचर्या में पहले नहीं कर पाते थे, का अवसर हमको प्राप्त हुआ। मशहूर लेखक श्री असगर वजाहत साहब के शब्दों में, "जैसे कहा जाता है की आवश्यकता अविष्कार की जननी है, मै तो यह कहूंगा की समय खोज की जननी है।" कोरोना काल में वह समय हम सबको मिला जिसमे हम चिंतन-मनन कर सकें। पर्यावरण, प्रकृति, मानवता आदि जैसे विषयों पर विचार-विमर्श कर सकें। निष्कर्ष रूप में यह कहना उचित जान पड़ता है के हम जिस प्रकार अपने प्राकृतिक स्त्रोतों का ह्रास क्र रहे थे, जिस गति से जिस डाल पर बैठे हैं उसी डाल को काट रहे थे, इस आपदा ने हमे चेताया के हमे प्रकृति की और विमुख होना है। अपने-आप से जुड़ने के लिए अपने आप के साथ वक़्त बिताना है जिससे हम जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों के प्रति संवेदनशील हो सकें। अब देखना यह होगा के इस आपदा से लड़ कर उबरने के बाद क्या हम मनुष्य प्रकृति की देख-रेख करेंगे! और हमारे साहित्यकार देखेंगे, तलाशेंगे और साहित्य में लिखेंगे इन प्रश्नों के उत्तर जो सालों पहले दिनकर जी ने पूछा था, "क्या खुली प्रेम आँख अधिक? भतीर कुछ बढ़ी दया क्या है?"

सन्दर्भ

1. आचटीटीपीइस://कविताकोश.अउआरजी/केके/चिंता_/_भाग_१_कामायनी_जयशंकर_प्रसाद
2. आचटीटीपीइस://कविताकोश.अउआरजी/केके/रश्मिरथी_/_पष्ठ_सर्ग_भाग_३
3. शुस्तेरमान, रिचर्ड. "एलियट एंड डी मुताशंस ऑफ़ ऑब्जेक्टिविटी." टी. स. एलियट: अ वौइस् दसकंटिंग. पलग्रैवे मैमिलन, लंदन, १९९०.१९५-२२५.
4. हॉलीवेल, स्टेफेन. एरिस्टोटल'स पोएटिक्स. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, १९९८.
5. आचटीटीपीइस://डीवायर.इन/बुक्स/क्वारंटाइन-डिजीज-राजिंदर-सिंह-बेदी-स्टोरी
6. आचटीटीपीइस://मध्यम.कॉम/लिटेराल्ल्य-लिटरेरी/अ-थीमेटिक-एनालिसिस-ऑन-लाइफ-ऑफ़-पि ८ब्ब२४२४ड़७१फ्८
7. आचटीटीपीइस:// डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.यूट्यूब.कॉम/वाच?व्=कदसस्तकजतनो
8. आचटीटीपीइस:// डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.यूट्यूब.कॉम/वाच?व्=व्मोक्षोप-ीपवि
9. आचटीटीपीइस:// डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.यूट्यूब.कॉम/वाच?व्=३ीा_पसी३६र्म
10. आचटीटीपीइस://सिट्टिंगबी.कॉम/डी-बेट-आंतों-चेखोव/